उपाध्याय पुष्कर मुनि जन्मोत्सव समारोह सम्पन्न

12 प्रांतों के 1800 से अधिक श्रृद्धालुओं ने भाग लिया

धर्म और अध्यात्म के क्षेत्र में पुष्कर मुनि की अमूल्य देन

साम्प्रदायिक सौहाद्र के पुरोधा थे पुष्कर मुनि

विशाल जनमेदनी को संबोधित करते हुए दिनेश मुनि ने कहा

शिर्डी, 25 अक्टूबर 2015। हजारों श्रद्धालुओं की आंखें मंच के पार्श्व में लगी विश्व संत उपाध्याय पुष्कर मुनि के विशाल चित्र पर टिकीं थीं। उपस्थित संत व श्रद्धालुजन बारी बारी से गुरु पुष्कर के जीवन व उनकी शिक्षाओं से जुडे प्रवचन दे रहे थे। प्रवचनों के बीच हजारों कंठों से निकलती 'जय पुष्कर – गुरु पुष्कर' की ध्वनी वातावरण को गुंजायमान कर रही थी। यह अद्भूत नजारा था रविवार 25 अक्टूबर 2015 को महाराष्ट्र प्रांत की धर्मनगरी 'शिर्डी' स्थित सिल्व्हर ओक लॉन्स का।

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ 'शिर्डी' द्वारा आयोजित उपाध्याय पुष्कर मुनि के 106 वें जन्मोत्सव समारोह में देशभर के श्रृद्धालुओं ने भाग लिया। समारोह में प्रातः 8 बजे से ही उपाध्याय पुष्कर मुनि के जयकारे के साथ श्रृद्धालुओं का आवागमन प्रारंभ हो गया। समारोह में महाराष्ट्र, मेवाड – मारवाड तथा मालवा मध्यप्रदेश, गुजरात, पंजाब, दिल्ली, कर्नाटक, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, इत्यादि 12 प्रांतों के 1800 से अधिक श्रृद्धालुओं ने भाग लिया।

समारोह को संबोधित करते श्रमणसंघीय सलाहकार दिनेश मुनि ने कहा कि **उपाध्याय पुष्कर मुनि ने समाज को नई दिशा प्रदान करने के लिए काफी संघर्ष किया। वे ऐसे महान व्यक्तित्व के धनी थे जिन्होंने पूरे विश्व में प्रेम, शांति और भाईचारे का संदेश प्रसारित किया। आज हम सभी उनके द्वारा प्रदत्त प्रेरणाओं के ऋणी हैं। दिनेश मुनि ने आगे कहा कि** कई वर्षों तक उपाध्यायश्री की सेवा में रहने का सुअवसर ही मेरे जीवन की अनमोल धरोहर है। जो भी श्रृद्धालु उनके सम्पर्क में आया उसे उन्होंने रज से रतन बनने का सदुपदेश दिया। वे जप एवं तप के महान आराधक थे। उन्होंने धर्म, अध्यात्म, शिक्षा, चिकित्सा एवं साहित्य के क्षेत्र में कई श्रावक तैयार किए जो समाज सेवा में अग्रणी कार्य कर रहे हैं। राजनीति में भी वे पारदर्शीता के प्रबल समर्थक थे। सच तो यह है कि वे इक्कसवीं शताब्दी के महान संत, साधक एवं आराधक थे। उनकी सबसे बडी विशेषता नवकार मंत्र का आमजन को मंगलपाठ देना रहा जिसके कारण अनेक लोग शारीरिक एवं मानसिक रोगों से मुक्त हुए। उनका जबर्दस्त प्रभाव यह रह कि वे जहां भी गए जैनेत्तर लोग भी बढी संख्या में उनके भक्त बन गये। उपाध्याय पुष्कर मुनि ने अपने उपदेशों द्वारा ग्रामीणजनों को सर्वाधिक प्रभावित किया और अनेकों को व्यसन मुक्त रहने का संकल्प दिलाया। आज भी भक्तजन उन्हें श्रद्धा से याद करते हैं।

पंडित रत्न पद्मऋषि ने समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि उपाध्याय पुष्कर मुनि ने **जैनधर्म के प्रत्येक पहलुओं को बारीकी से लोगों तक पहुंचाने का काम किया। उन्हें वर्तमान के साथ भविष्य की स्थितियों का ज्ञान था। इसी वजह से उन्होंने युग की स्थिति का भांपते हुए जैनधर्म को नई दिशा देने का प्रयास किया।**

विशिष्ट अतिथि लोक सभा सदस्य दिलीप गांधी, अहमदनगर ने कहा कि पुष्कर मुनि ने अपने जीवनकाल में साधना को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। और अपने भक्तों को भी साधना के निए प्रेरित किया।

मधुरवक्त लोकेश ऋषि ने कहा कि उन्होंने **प्रवचनों और व्यवहार द्वारा जीवन के उच्चतम नैतिक, मानवीय और आध्यात्मिक मूल्यों को समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया।** गुरु की गरिमा हिमालय से उच्च और उज्ज्वल होती है। गुरु पुष्कर ऐसे मुनि थे जहां भौतिकता की चकाचौंध से परे आध्यात्मिक उन्नयन की साधना में निरत रहे। उन्होंने जैन एकता के लिए भरसक प्रयत्न किया।

डॉ. द्वीपेन्द्र मुनि ने गुरु बिन घोर अंधार की व्याख्या करते हुए पुष्कर मुनि को सभी विपत्तियों का समन करनेवाला आराधक बताया और कहा कि सच्चा सम्मान भौतिक सम्पदा वालों का नहीं होकर आध्यात्मिक शक्ति सम्पन्न व्यक्तियों का होना चाहिए और वे ही काल के इतिहास में अमर बने रहते हैं। उन्होंने आचार्य देवेन्द्र मुनि के रुप में ऐसा शिष्य तैयार किया जिसने श्रमण संघ को नई उचाईया प्रदान की।

डॉ. पुष्पेन्द्र मुनि ने कहा कि साधना के शिखर पुरूष उपाध्याय पुष्कर मुनि को आज भी नवकार मंत्र के आराधक तथा निर्मल,शुद्ध एवं वात्सल्य भावों से ओत–प्रोत साधक के रूप में याद किया जाता है। उनके जीवन की गहराई को नापना मुश्किल कार्य है। उन्होंने अपने जीवन में कहीं अग्रता एवं उत्ताप को स्थान नहीं दिया और यहीं कारण है कि वे आज भी मानवता के मसीहा के रूप में याद किये जाते हैं। उपाध्याय पुष्कर मुनि ने समाज को नई दिशा प्रदान करने के लिए काफी संघर्ष किया। वे ऐसे महान व्यक्तित्व के धनी थे जिन्होंने पूरे विश्व में प्रेम, शांति और भाईचारे का संदेश प्रसारित किया। आज हम सभी उनके द्वारा प्रदत्त प्रेरणाओं के ऋणी हैं।

समारोह का शुभारंभ नवकार महामंत्र महाजाप से हुआ तत्पश्चात् आदर्श बहु मंडल की सदस्याओं प्रेरणा लोढा, रुपाली लोढा, कविता लोढा, प्रिया लोढा द्वारा 'गुरु पुष्कर चालिसा' का सामूहिक गान किया गया। इसी क्रम में सुशील बहु मंडल की सदस्याओं सुरेखा लोढा, भारती पारख, सरला लोढा, कल्पना ओस्तवाल, ज्योति ओस्तवाल ने 'गुरु पुष्कर का दरबार सुहाना लगता है' गीत प्रस्तुत किया। ''मेरे सिर पर रख दो, पुष्कर गुरुवर अपने ये दोनो हाथ'' नामक गीत पर लुक एण्ड र्लन पाठशाला के जिया पारख, दिप लोढा, नेतल समदडिया, सिद्ध लोढा, साईशा ओस्तवाल, प्रित बाफना, पूर्वा लोढा, साहिल लोढा द्वारा नृत्य प्रस्तुति की गई। गीतकार पारस जैन द्वारा 'गुरु पुष्कर वापस आओं' गीत प्रस्तुत कर सभा को भाव विभोर कर दिया। श्रीसंघ शिर्डी के संघपति पुखराज लोढा व महामंत्री विजय लोढा ने पुष्कर मुनि को क्षमा की प्रतिमूर्ति बताते हुए उनके योगदान को स्मरण करवाया।

श्रमण संघ का प्रथम मौका जब विशाल समारोह में जिसमें देश भर से पधारे अतिथि जनों का शाब्दिक स्वागत किया गया, समारोह में हार शाल माला का प्रयोग नहीं किया गया। उपस्थित गुरुभक्तों ने इस कार्य की सराहना की।

अब चातुर्मास में नहीं होगे स्वागत

श्रमण संघीय सलाहकार दिनेश मुनि की आज्ञा से डॉ. पुष्पेन्द्र मुनि ने इस अवसर पर महत्वपूर्ण घोषणा करते हुए कहा कि वे अपने चातुर्मास के दौरान किसी भी अतिथि या महानुभाव का हार – शाल प्रतीक चिन्ह देकर स्वागत नहीं करवाएगें। एवं चातुर्मास प्रवेश की रंगीन पत्रिका का प्रकाशन भी नहीं करेगे अपितु भक्तों को सूचनार्थ सिर्फ अंतर्देशीय पत्र का प्रकाशन करेंगें। साध्वी संयमप्रभा का 2016 का चातुर्मास बेलापुर में करने की घोषण की। उल्लेखनीय है कि बेलापुर श्रीसंघ साध्वी संयमप्रभा ठाणा 4 का आगामी वर्ष 2016 का चातुर्मास बेलापुर श्रीसंघ में करवाएगें।

मुख्यअतिथि मोहनलाल चौपडा व समारोह अध्यक्ष प्रकाश धारीवाल ने अपने जीवन पर उस महापुरुष द्वारा घटित चमत्कारों का उल्लेख करते हुए महान जपयोगी बताया। श्रीमती रुचिरा सुराणा ने उपाध्याय पुष्कर मुनि के साहित्य में नारी जीवन पर वक्तव्य देते हुए कहा कि नारी के सभी आदर्शों की महिमा उन्होनें अपने साहित्य में बताई। वे नारी स्वतंत्रता के पक्ष में तो है, लेकिन नारी के स्वच्छन्दाचार के पक्ष में नहीं है। मर्यादाओं का उल्लंघन सिर्फ नारी जीवन के लिए ही अहितकर नहीं है, अपितु वह परिवार और समाज के लिए भी अहितकर है। जैन कांफ्रेंस के राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष महेन्द्र पगारिया ने श्रमण संघ निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने वाले उपाध्याय पुष्कर मुनि के संघ निर्माण व श्रमण संघ उत्थान में महत्पूर्ण योगदान बताते हुए कांफ्रेंस की ओर से श्रद्वा पुष्प अर्पित किए। उपाध्यक्षा वनिता ओरडिया ने अपने वक्तव्य में कहा कि पुष्कर मुनि सहृदय की प्रतिमूर्ति थे। उनके उपदेश प्रेम, अहिंसा, सहिष्णुता पर आधारित होते थे।

इसी क्रम में बैगलोर श्री संघ अध्यक्ष चेतनप्रकाश डूंगरवाल, उदयपुर नगर निगम पूर्व महापौर रजनी डांगी, श्री तारक गुरु जैन ग्रन्थालय मंत्री वीरन्द्र डांगी, पूर्व महामंत्री पारस छाजेड़, महावीर भवन सूरत के पूर्व अध्यक्ष बसंतीलाल भोगर, महावीर गौशाला उमरणा अध्यक्ष लक्ष्मीलाल कच्छारा, सूरत महासंघ अध्यक्ष रोशनलाल ओरडिया, धनंजय चौरडिया, शान्तिलाल गुन्देचा इत्यादि आदि वक्ताओं ने विचार व्यक्त किए।

जन्म जयन्ती समारोह गौमतप्रसादी लाभार्थी परिवार श्री पुखराज सरिता लोढा, श्री रतिलाल चन्द्रकला लोढा, शिवचंद सज्जनबाई पारख, श्रीमती चंचल बाई पुत्र विजय लोढा व नरेश प्रिया पारख थे, जबकि सम्पूर्ण चातुर्मास लाभार्थी परिवार श्रीमती रतनबाई भीकचंद लोढा, श्री सुभाष – पुष्पा, डॉ. संचालाल – संध्या, श्री सुरेश – सरला, श्री धीरज – प्रियंका, श्री निर्मल – नीलम, अंकित, तुषार, अर्हम लोढा परिवार है। जन्मजयन्ती कार्यक्रम स्थल लाभार्थी श्री सुनील बाबूलाल लोढा कोप्परगांव व जयन्ती मिनरल वाटर लाभार्थी श्रीमती प्रेमाबाई सूरजमल लोढा परिवार थे।

समारोह का संचालन डॉ. पुष्पेन्द्र मुनि ने किया और आभार रस्म उपसंघपति दिलीप संकलेचा ने अदा की।

फोटो केप्शन

पी...1 समारोह में मंचासीन मुनिवृंद।

पी...2 समारोह को संबोधित करते सलाहकार दिनेश मुनि।

पी...3 समारोह में उपस्थित श्रावक –श्राविकाएं।

पी...4 समारोह में उपस्थित श्रावक–श्राविकाएं।